



बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक-06
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



भारत के संविधान में राजभाषा

4. प्रशासनिक संहिताओं और अन्य कार्य-विधि साहित्य का अनुवाद --

इस आवश्यकता को दृष्टि में रखकर कि संहिताओं और अन्य कार्यविधि साहित्य के अनुवाद में प्रयुक्त भाषा में किसी हद तक एकरूपता होनी चाहिए, समिति ने आयोग की यह सिफारिश मान ली है कि सारा काम एक अधिकरण को सौंप दिया जाए।

शिक्षा मंत्रालय सांविधिक नियमों, विनियम और आदेशों के अलावा बाकी सब संहिताओं और अन्य कार्यविधि साहित्य का अनुवाद करे। सांविधिक नियमों, विनियमों और आदेशों का अनुवाद संविधियों के अनुवाद के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है, इसलिए यह काम विधि मंत्रालय करे। इस बात का पूरा प्रयत्न होना चाहिए कि सब भारतीय भाषाओं में इन अनुवादों को शब्दावली में जहां तक हो सके एकरूपता रखी जाए।

5. प्रशासनिक कर्मचारी वर्ग को हिन्दी का प्रशिक्षण --

- (क) समिति द्वारा अभिव्यक्त मत के अनुसार 45 वर्ष से कम आयु वाले सब केन्द्रीय कर्मचारियों के लिए सेवा कालीन हिन्दी प्रशिक्षण प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया जाना चाहिए। तृतीय श्रेणी के ग्रेड से नीचे के कर्मचारियों और औद्योगिक संस्थाएं और कार्य प्रभारित कर्मचारियों के संबंध में यह बात लागू न होगी। इस योजना के अन्तर्गत नियत तारीख तक विहित योग्यता प्राप्त कर सकने के लिए कर्मचारी को कोई दंड नहीं किया जाना चाहिए। हिन्दी भाषा की पढ़ाई के लिए सुविधाएं प्रशिक्षार्थियों को मुफ्त मिलती रहनी चाहिए।
- (ख) गृह मंत्रालय उन टाइपकारों और आशुलिपिकों का हिन्दी टाइपराइटिंग और आशुलिपि प्रशिक्षण देने के लिए आवश्यक प्रबन्ध करे जो केन्द्रीय सरकार की नौकरी में हैं।
- (ग) शिक्षा मंत्रालय हिन्दी टाइपराइटर्स के मानक की-बोर्ड (कुंजीपटल) के विकास के लिए शीघ्र कदम उठाए।

6. हिन्दी प्रचार --

- (क) आयोग की इस सिफारिश से कि यह काम करने की जिम्मेदारी अब सरकार उठाए, समिति सहमत हो गई है। जिन क्षेत्रों में प्रभावी रूप से काम करने वाली गैर सरकारी संस्थाएं पहले से ही विद्यमान हैं उनमें उन संस्थाओं को वित्तीय और अन्य प्रकार की सहायता दी जाए और जहां ऐसी संस्थाएं नहीं हैं वहां सरकार आवश्यक संगठन कायम करे।
शिक्षा मंत्रालय इस बात की समीक्षा करे कि हिन्दी प्रचार के लिए जो वर्तमान व्यवस्था है वह कैसी चल रही है। साथ ही वह समिति द्वारा सुझाई गई दिशाओं में आगे कार्रवाई करे।
- (ख) शिक्षा मंत्रालय और वैज्ञानिक अनुसंधान और सांस्कृतिक कार्य मंत्रालय परस्पर मिलकर भारतीय भाषा, विज्ञान भाषा-शास्त्र और साहित्य सम्बन्धी अध्ययन और अनुसंधान को प्रोत्साहन देने के लिए समिति द्वारा सुझाए गए तरीके से आवश्यक कार्रवाई करें और विभिन्न भारतीय भाषाओं को परस्पर निकट लाने के लिए अनुच्छेद 351 में दिए गए निदेश के अनुसार हिन्दी का विकास करने के लिए आवश्यक योजना तैयार करें।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह —	3
रेल समाचार —	
— आदिश कुमार	4
मोबाइल एवं ट्रांसलिट्रेशन —	
— विनोद कु. त्रिपाठी	5
बेटे की नेकी—	
— प्रियंका पाण्डेय	6
प्रेम एक शाश्वत...—	
— इंद्र ज्योति राय	9
हावड़ा ब्रिज	
— रीतेश कुमार	11
प्रजापति ब्रह्मकुमारी..	
— सच्चिदानंद जिज्ञासु	15
विश्व हिन्दी दिवस	
— अर्जुन बैठा	14
जरा हंसिये तो	
— सुरेश सिंह	16
राजमहल की पहाड़िया —	
— ऋचा कुमारी	17
फूल हो तुम	
— विजय कुमार	18
किसान	
— विनय कुमार झा	18
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक, बढ़ते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पूर्व रेलवे/मालदा
फोन- 72190/ 72192 (रेलवे)

Email – Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.er.indianrailway.gov.in

स्वाधीनता एवं भाषा

किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रगान का है, वही उसकी राजभाषा का है। प्रजातांत्रिक देश में जनता और सरकार के बीच भाषा की दीवार नहीं होनी चाहिए और शासन का काम जनता की भाषा में किया जाना चाहिए। जब तक विदेशी भाषा में शासन होता रहेगा, तब तक कोई देश सही अर्थों में स्वतंत्र नहीं कहा जा सकता।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी भाषा में ही स्पष्टता और सरलता से अपने विचारों को अभिव्यक्त कर सकता है। नूतन विचारों का स्पंदन और आत्मा की अभिव्यक्ति, मातृभाषा में ही सम्भव है। राजभाषा देश के भिन्न भिन्न भागों को एक सूत्र में पिरोने का कार्य करती है इसके माध्यम से जनता न केवल अपने देश की नीतियों और प्रशासन को भलीभांति समझ सकती है, बल्कि उसमें स्वयं भी भाग ले सकती है। प्रजातंत्र की सफलता के लिए ऐसी व्यवस्था अत्यंत आवश्यक है।

विश्व के सभी स्वतंत्र देश और नवोदित राष्ट्रों ने इस तथ्य को स्वीकार किया है कि उनका उत्थान, उनकी अपनी भाषाओं के माध्यम से ही सम्भव है। रूस, जापान, जर्मनी, आदि सभी राष्ट्र इसके प्रमाण हैं। भारतीय संविधान सभा इस तथ्य से पूर्णतः परिचित थी। इसलिए यद्यपि अंग्रेजी के समर्थकों ने उसकी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति और समृद्धि की बड़ी वकालत की, फिर भी राष्ट्रीय नेताओं ने देश के बहुसंख्यक वर्ग द्वारा बोली जाने वाली और देश के अधिकांश भाग में समझी जाने वाली भाषा हिन्दी को ही भारत संघ की राजभाषा बनाया।

हिन्दी को संघ की राजभाषा 1950 में ही घोषित कर दिया गया था, किंतु केंद्र सरकार के कामों में हिन्दी को अंग्रेजी का स्थान देने के लिए गंभीरता से प्रयास केंद्र सरकार द्वारा 1960 और विशेषकर राजभाषा अधिनियम, 1963 के पास होने के बाद से प्रारंभ किया गया। उस समय यह अनुभव किया गया कि हिन्दी के माध्यम से प्रशासन का कार्य चलाने के लिए कुछ प्रारंभिक तैयारियों की आवश्यकता पड़ेगी, जैसे:- प्रशासनिक, वैज्ञानिक, तकनीकी एवं विधि शब्दावली का निर्माण एवं अनुवाद। सरकारी कर्मचारियों का हिन्दी प्रशिक्षण हिन्दी टाइपराइटर्स एवं अन्य यांत्रिक साधनों की व्यवस्था आदि। राजभाषा हिन्दी की प्रगति लिए इस तरह की उन सारी आवश्यकताओं को पूरा करने की दिशा में कार्य किया गया तब आज यह लगने लगा है कि हिन्दी ही वास्तव में भारत की राजभाषा है।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साहू अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर

रेल समाचार

रेलवे का टिकट और आधार कार्ड

सरकारी के आकड़ों के अनुसार 90 फीसदी से अधिक लोगों को आधार नंबर दिए गए हैं। आधार कार्ड लागू करके रेलवे आसानी से कालाबाजारी पर रोक लगाते हुए राजस्व में हो रहे घाटे की जांच कर सकेगी। पीआरएस में यात्री का आधार कार्ड यदि एक बार दर्ज हो गया तो भविष्य में उसे बार-बार रिजर्वेशन फार्म भरने के झंझट से मुक्ति मिल सकती है। इस व्यवस्था में यात्री अनेक बार अपना टिकट बुक करा सकेंगे। वहीं, इससे रेल टिकटों की दलाली पर भी पूरी तरह से अंकुश लगेगा। आधार कार्ड से टिकट बुकिंग के लिए क्रिस पीआरएस साफ्टवेयर में बदलाव कर रहा है। वर्तमान में टिकट बुक कराने के लिए रिजर्वेशन फार्म में नाम, पता, उम्र, मोबाइल नंबर, दूसरे यात्रियों की जानकारी लिखनी पड़ती है जो अब बार बार लिखने की आवश्यकता नहीं होगी।

रेलवे द्वारा जारी नये नियमों के अनुसार वरिष्ठ नागरिकों को ट्रेन टिकट पर मिलने वाली छूट के लिए आधार कार्ड रखना अनिवार्य होगा। इतना ही नहीं बल्कि काउंटर और ई-बुकिंग दोनों ही में। अप्रैल से अनिवार्य रूप से आधार कार्ड होने का नियम लागू हो जाएगा। अभी तक ऑनलाइन रेल टिकट बुकिंग के लिए कोई भी आई-कार्ड का यूज किया जा रहा है। लेकिन जल्द ही ट्रेन का टिकट बुक कराने के लिए आधार कार्ड के नंबर की जरूरत होगी।

भारतीय रेलवे ने पैसेंजर टिकट स्कीम सर्विस को यूआईडी डेटाबेस स्कीम से जोड़ने का पूरा इंतजाम कर लिया है। इस योजना का उद्देश्य टिकटों की कालाबाजारी पर रोक लगाना है। यात्री टिकट सुविधा को आधार कार्ड से जोड़ने की यह योजना रेलवे दो चरणों में लागू करेगी। पहले चरण में वरिष्ठ नागरिक, स्वतंत्रता सैनानी, विकलांग, जैसे आरक्षित उम्मीदवारों के लिए आधार कार्ड अनिवार्य किया जाएगा। जहां तक दूसरे चरण की बात है तो इसमें सबसे पहले सभी सर्विसेस को आधार कार्ड से लिंक किया जाएगा। इसके बाद रेल टिकट बुकिंग के लिए आधार कार्ड होना जरूरी हो जाएगा।

आधार कार्ड बुकिंग से यात्री को केवल ट्रेन नंबर, गंतव्य व श्रेणी के बारे में लिखना होगा। यात्री का आधार कार्ड नंबर डालते ही शेष समस्त जानकारी स्वतः कंप्यूटर स्क्रीन पर आ जाएगी। ऐसे यात्री हर बार अपने आधार नंबर से टिकट बुक करा सकेंगे। वर्तमान में एक रिजर्वेशन फार्म से अधिकतम छह लोगों की टिकट बुक हो सकती है जो ऑनलाइन और काउंटर टिकट की बुकिंग के लिए आगे भी लागू होगी।

रेल संपर्क' सेवा

आईआरसीटीसी ने रेल यात्रियों को बेहतर संपर्क सुविधा उपलब्ध कराने के लिए जो सेवाएं शुरू की हैं, उनके तहत यात्री अब 139 इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस सुविधा के जरिए कुली और टैक्सी सेवाएं ले सकते हैं। व्हीलचेयर, पिक एंड ड्रॉप और कुली सेवाएं प्रमुख रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध होंगी। इस नंबर का इस्तेमाल ज्यादातर पीएनआर, सीट, किराया पूछताछ एवं भोजन की बुकिंग के लिए किया जाता है। रेलवे ने हाल ही में यात्रियों को 139 पर ट्रेन आरक्षण निरस्त करने और रिफंड का दावा करने की अनुमति देने वाली सुविधाएं शुरू की हैं तथा 'पिक एंड ड्रॉप' सेवा से प्रमुख स्टेशनों पर यात्रियों को कैब किराए पर लेने में सहूलियत होगी। सभी वीजा, मास्टर, डेबिट और क्रेडिट कार्डों का इस्तेमाल टिकट की बुकिंग, टैक्सी बुलाने, व्हील चेयर सेवा की बुकिंग के लिए किया जा सकता है। रेलवे प्लेटफार्मों पर बुजुर्ग, बीमार, दिव्यांग या जरूरतमंद यात्रियों के लिए व्हीलचेयर की सुविधा भी उपलब्ध कराई जाएगी। — आदिश कुमार

मोबाइल और ट्रांसलिट्रेशन

माइक्रोसॉफ्ट की स्वामित्व वाली मोबाइल की बोर्ड कंपनी स्विफ्टकी ने हिंदी और गुजराती भाषा में ट्रांसलिट्रेशन फ्रीचर शुरू किया है। इसके लिए मोबाइल में स्विफ्टकी को डाउनलोड करना होगा। कंपनी लंबे वक्त से ट्रांसलिट्रेशन फ्रीचर पर काम कर रही थी। अब इसकी मदद से उपयोगकर्ता अंग्रेजी में टाइप करके हिंदी और गुजराती में शब्द लिख सकेंगे। बता दें कि स्विफ्टकी पर पहले से ही 22 भारतीय भाषाओं के कीबोर्ड उपलब्ध और अपडेट हो चुके हैं स्विफ्टकी ऐप में ट्रांसलिट्रेशन फ्रीचर अपने आप इनेबल हो जाएगा यदि मोबाइल में पहले से हिंदी या गुजराती लैंग्वेज मॉडल इंस्टॉल हैं। इसका मतलब है कि क्वर्टी लेआउट में टाइप करने पर यूजर को हिंदी या गुजराती शब्द का सुझाव मिलेगा।

स्विफ्टकी ऐप का एक अहम फ्रीचर यह है कि यह दोनों भाषा में शब्दों के सुझाव देता है। इसके अलावा अगले शब्द का सुझाव भी दोनों भाषाओं में मिलता है और यह सब कुछ अंग्रेजी कीबोर्ड पर ही होता है। यूजर नए फ्रीचर की मदद से अंग्रेजी में टाइप करेंगे इसके बाद हिंदी या गुजराती शब्दों में से एक का चुनाव कर सकेंगे। यूजर ऐप में अंग्रेजी, नेटिव स्क्रिप्ट या दोनों के मिश्रण में टाइपिंग कर सकते हैं। यह उन यूजर के लिए बेहद ही कारगर साबित होगा जो हिंदी में लिखना तो चाहते हैं लेकिन हिंदी कीबोर्ड पर टाइपिंग को लेकर सहज नहीं हैं।

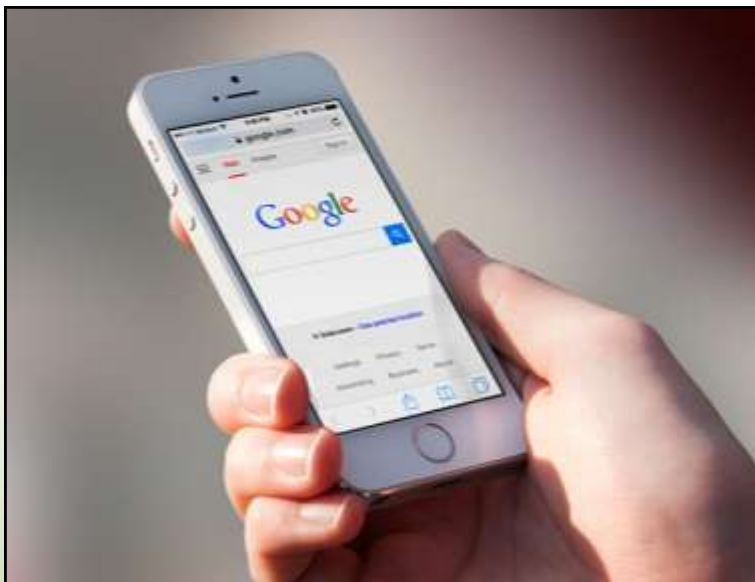
स्विफ्टकी कीबोर्ड ऐप इन फ्रीचर के साथ गूगल के बहुभाषी इंडिक कीबोर्ड ऐप को चुनौती देगा। इंडिक कीबोर्ड ऐप हिंदी के अलावा 10 और क्षेत्रीय भाषाओं को काम करता है।

हाल ही में गूगल ने वाट्सप, हाइक और फेसबुक जैसे मैसेंजर ऐप्स को टक्कर देने के लिए अपना मैसेजिंग ऐप **गूगल ऐलो** को लांच किया है। इस ऐप के नए और जबरदस्त सुविधाओं को देखते हुए इंटरनेट पर इसे बहुत ही अच्छा समर्थन मिल रहा है।

गूगल ऐलो को गूगल सहायता की मदद से बहुत ही आसान व संचालन योग्य बनाया गया है। गूगल सहायक एक ऐसा फ्रीचर है जो ऐलो में बहुत कुछ मदद करता है। हर एक सवाल का जवाब देता है और अगर ऐलो में गूगल सहायक को जिन चीजों का ज्ञान नहीं है तो वह उसे वेब से ढूढ़ कर आपको प्रदर्शित करता है।

इस ऐप को गूगल प्ले स्टोर और ऐपल ऐप स्टोर से निशुल्क: अपने स्मार्टफोन में डाउनलोड किया जा सकता है। गूगल ऐलो में आप बिना कोई टेक्स्ट लिखे या टाइप किये वायस मैसेज की मदद से चैट कर सकते हैं। इसकी वायस रिकग्नेशन अर्थात बोले गये आवाज को पहचानने की सेवा बहुत अच्छी है और यह अंग्रेजी के शब्दों को आसानी से हर तरीके से समझने में माहिर है जिससे वायस के रूप में इसका बेहतर उपयोग किया जा सकता है। गूगल ऐलो निश्चित ही हिन्दी के बढ़ने में मदद करेगी।

— विनोद कुमार त्रिपाठी

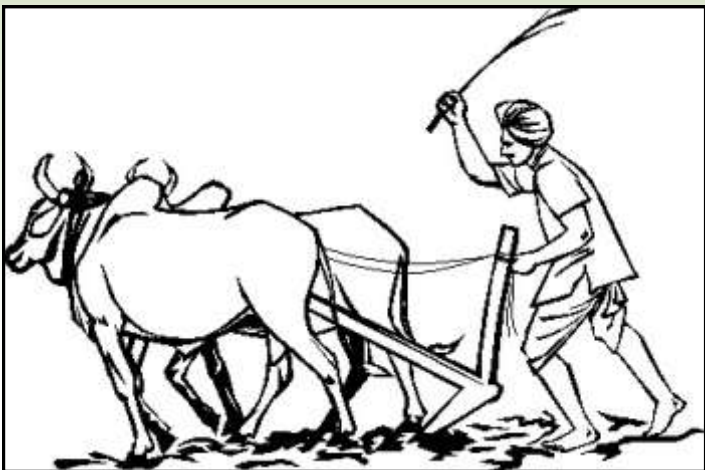


बेटे की नेकी

भूपेसरा सबेरे-सबेरे घर से निकल पड़ा। उसके मन को थोड़ी भी शांति नहीं मिल रही थी। शांति मिलती भी तो कैसे! अब तक एक भी पैसे का इंतजाम जो नहीं कर सका था। मां की हालत बिगड़ती जा रही थी। वह घबड़ाते हुए घर लौट आया। वह अपनी मां की हालत देखकर रो पड़ा। पूरे गांव में उसे 500 रुपये नहीं मिल सके।

गांव के सभी के यहां उसने काम किया है। बहुतों ने तो उसकी मजदूरी भी हड़प ली थी। उसे इससे पहले इतना कष्ट नहीं हुआ था जितना आज हो रहा था। पूरा गांव छान मारा पर किसी ने उसको 500 रुपये तो दूर, दो सौ रुपये भी नहीं दिए थे जिससे वह अपनी बीमार मां की दवा करा सके।

भूपेसरा ने बाप का साया भी नहीं देखा था। मां ही उसके लिए मां-बाप दोनों ही थी। उसी मां की तबीयत प्रति पल बिगड़ती जा रही थी पर कोई कर्ज में भी रुपये उसकी दवा के लिए नहीं दे रहा था। वह बचपन से लेकर जवानी तक सुख किस चिड़िया का नाम है, जानता भी न था पर उससे आज के दिन का दर्द सहा नहीं जा रहा था।



उसके लिए उसका गांव वही था पर उसकी मां कहा करती थी- “बेटा, हमलोगों का गांव केशवपुर था जहां तुम्हारे बाप के पास खेती के लायक पांच बीघा जमीन थी। हमलोग बड़े खुशहाल थे पर तुम्हारे जन्म के दो साल बाद ही कोशी नदी में बाढ़ आ गई। घर तो बाढ़ में बह ही गया, खेत भी नदी के कटाव से नहीं बच सके। हमलोग रातों-रात खेतीहर से मजदूर बन गए। अब केशवपुर में बचा ही क्या था जो हमलोग वहां रहते। तुम्हारा बाप हमलोगों को लेकर इस गांव में आ गया..।”

उसे याद है मां कहा करती थी कि पहले गांव में बड़े सज्जन लोग रहते थे। हर किसी के सुख-दुख में साथ देते। दूसरे के दुख-दर्द को मिल-बैठकर बांटा करते थे। पर आज वही गांव है, मदद तो दूर, सूद पर भी एक रुपया तक नहीं मिल रहा है।

उसे बड़ा अफसोस हो रहा था कि फुलेसरा ने उसे बंबई जाकर फल बेचने के लिए कहा। वह उसका भी टिकट काट कर उसे बंबई ले जाने के लिए तैयार था। पर उसी का मन नहीं करता था गांव छोड़ कर जाने का। लेकिन अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत। भूपेसरा पागल-सा हो रहा था। उसे पैसा मिलने की एक भी आशा नहीं दिखाई दे रही थी।

मां दर्द के मारे कभी-कभी चिल्ला उठती थी। पर वह उसे डाक्टर के पास अस्पताल कैसे ले जाए! डाक्टर ने तो पहले ही बता दिया था कि पेट में एपेंडेसाइटिस है और उसके लिए आपरेशन करना होगा। सरकारी अस्पताल है इसलिए आपरेशन का पैसा तो नहीं लगेगा पर डाक्टर को पूजा के रूप में पांच सौ रुपये देने होंगे। जब तक पांच सौ रुपये नहीं मिलेंगे, उसकी मां का आपरेशन नहीं होगा।

मां और बेटे, दोनों अपनी बेबसी पर रो रहे थे। उस समय भगवान ही उनका सहारा था।

भूपेसरा को तत्काल गांव के प्रचंड सूदखोर रामायण सिंह की याद आई। रामायण सिंह इस धरती के साक्षात

यमदूत थे। उनका वसूल सिर्फ सूद था। वह अपने मूल के फेरे में नहीं रहते पर सूद के लिए हर तरह की जिल्लत उठा कर भी वसूल करके ही रहते। कितने ही दीन-दुखियों का घर और खेत अब तक वे हड़प चुके थे। लोग रोगी होकर पैसों के लिए मर जाना अधिक पसंद करते पर उनसे रुपया कर्ज लेना सीधे घुट-घुटकर मौत को दावत देना मानते थे।

रामायण सिंह को भूपेसरा भले ही जालिम सिंह मानता रहा, यदि वह स्वयं बीमार होता तो शायद ही उनके पास जाता! पर मां के लिए तो वह सब कुछ खोने के लिए भी तैयार था। वह घर से निकल कर दौड़ता हुआ रामायण सिंह के दरवाजे जा लगा। उसने हांफते हुए कहा-“मालिक, हमें हजार रुपये की जरूरत है, मां बीमार है, आपरेशन कराना है।”

“सरकारी अस्पताल में कौन-सा पैसा लगता है जो तुम्हें रुपये की जरूरत पड़ गई है?”

“सरकारी अस्पताल में आपरेशन का पैसा नहीं लगेगा पर जो डॉक्टर आपरेशन करेगा, उसे 500 रुपये देने होंगे।”

“क्यों देना होगा?” रामायण सिंह ने पूछा।

“नहीं देने से अभी आपरेशन नहीं होगा।” भूपेसरा ने अपनी मजबूरी बताई।

“तो आपरेशन बाद में ही कराओ, इतनी जल्दी भी क्या है?”

“नहीं मालिक! अब मां का दर्द से चिल्लाना और नहीं सहा जाता। उसका चिल्लाना सुनकर मेरा कलेजा फटने लगता है। आप किसी तरह हमें हजार रुपये दे दीजिए।”

“हजार रुपये! यह तो बहुत है। इतने रुपये तो मेरे पास नहीं हैं। यदि रहते तो तो मैं तुम्हारी हालत देखकर अवश्य दे देता।”

“नहीं मालिक! ऐसा मत कीजिए, आप हमें सूद पर ही रुपए दे दीजिए, लेकिन खाली हाथ मत लौटाइए। मैं पूरा गांव घूम आया हूं पर किसी ने 100 रुपये भी नहीं दिए हैं।”



“ओह! तो यह बात है, पूरे गांव में तुम्हें जब कहीं रुपया नहीं मिला तो यहां आए हो।” रामायण सिंह के मुंह पर कटुता नाचने लगी थी।

“मालिक, ऐसा मत कहिए। मुझे सूद पर ही रुपये दे दीजिए। मैं आपका पाई-पाई मेहनत-मजूरी करके लौटा दूंगा।” भूपेसरा ने रामायण सिंह के पैर पकड़ लिया।

“ठीक है, मैं तुम्हें हजार रुपये तो दे दूंगा पर 10 रुपया सैकड़ा के हिसाब से सूद लूंगा। और यदि मेरे रुपये सूद समेत एक साल के भीतर नहीं लौटाए तो तुम्हारा खेत जो अब रेहन रहेगा, मेरा हो जाएगा। यदि तुम्हें शर्त मंजूर हो तो रुपये दूं अन्यथा तुम जा सकते हो।”

भूपेसरा के लिए और कोई चारा नहीं था। आज हजार रुपये के बदले 10 कट्टा खेत दे देना उसे खून के आंसू रुला गया। इसी खेत की रक्षा के लिए वह बम्बई नहीं गया था और आज वही खेत दांव पर लग गया था।

पर मां को तड़पता देख पाना भी उसके बस में नहीं था। वह अंत में हार कर बोला-“मालिक जैसी आपकी इच्छा। आप रुपये दे दीजिए। हम अपना खेत आपके नाम कर देते हैं।”

रामायण सिंह ने तुरंत हैंडनोट पर भूपेसरा के दस्तखत ले लिए। भूपेसरा वहां से रुपये लेकर वापस घर आ

गया।

भूपेसरा की मां का आपरेशन हो गया। वह कुछ दिनों में ठीक होकर घर वापस आ गई। पर भूपेसरा के लिए तो अब कोई काम ही नहीं बचा था। कल तक वह खेतीहर था लेकिन आज वह मजदूर बन गया था। मां को जब खेत बंधक रखने की बात पता चली तो वह टेकती -टेकती रामायण सिंह के घर पहुंची।

रामायण सिंह ने उसे यह कह कर भगा दिया कि उसने कोई जबरदस्ती तो उससे जमीन लिया नहीं है, तुम्हारी बीमारी के लिए ही वह पैसे ले गया है। इसमें हम कुछ नहीं कर सकते। अब तो जब तक तुम लोग सूद समेत रुपये नहीं लौटाओगे, खेत हम नहीं छोड़ेंगे।

बुढ़िया निराश होकर लौट आई। भूपेसरा के पास अब जीने का कोई सहारा शेष नहीं था। वह मां को साथ लेकर गांव छोड़ कर एक दिन बंबई जाने की गाड़ी पकड़ने स्टेशन चल पड़ा।

गाड़ी पकड़ने के लिए वह प्लेटफॉर्म पर खड़ा था। रामायण सिंह का बड़ा बेटा मिलिट्री में किसी बड़े पद पर काम करता था, वह गांव आ रहा था। उसने भूपेसरा को देख कर बुलाया।

भूपेसरा कुछ बोलता इसके पहले ही उसकी मां ने रो-रोकर अपने गांव छोड़ कर जाने की दास्तान कह डाली। रामायण सिंह के लड़के सुब्रत सिंह को यह अच्छा नहीं लगा कि उसके बाप की स्वार्थलोलुपता के कारण गांव का निर्धन आदमी गांव से ही उजड़ जाए। उसने भूपेसरा को फिर से गांव लौटने को कहा।

लेकिन भूपेसरा गांव में करता भी क्या? अब तो उसके खेत भी नहीं थे। उसने कहा-“मालिक, हम गांव लौट कर करेंगे भी क्या? आपके बापू को जब तक हम रुपये मय सूद लौटा नहीं देंगे, वे हमारा खेत नहीं छोड़ेंगे। हम लोगों के पास इतना रुपया अभी कहां से होगा? इसलिए हम लोगों को गांव छोड़ कर जाने में ही फायदा है।”

“देखो, हम किसी को गांव में बसा नहीं सकते तो उजाड़ने का भी हक हमें नहीं है। तुम लोग गांव चलो, हम तुम्हारा खेत छुड़वा देंगे।”

“सच मालिक!” भूपेसरा की आंखें छलछला आईं। उसने सुब्रत सिंह का समान उठाया और गांव की तरफ लौट पड़ा।

दूसरे दिन सुब्रत ने भूपेसरा को बुलवाया और अपने बाप से उसकी जमीन छोड़ देने का आग्रह किया। पर रामायण सिंह उनकी बात से सहमत नहीं थे। उनका कहना था कि जब पूरे गांव में किसी ने इसको रुपये नहीं दिए तो हमने दिया है। इसने अपनी इच्छा से ही जमीन मेरे पास बंधक रखी है। मैं बिना पैसे लिए इसकी जमीन नहीं छोड़ने वाला।

अब सुब्रत सिंह के लिए बड़ी परेशानी खड़ी हो गई। एक तरफ भूपेसरा को क्या मुंह दिखाएंगे तो दूसरी तरफ अड़ियल बाप को कैसे मनाएं। सुब्रत सिंह की मजबूरी समझ कर भूपेसरा ने कहा-“मालिक, आप मेरे लिए अपने बाप को क्यों नाराज करेंगे, मैं ही गांव छोड़ कर पुनः चला जाता हूं। आप अपने मन में कोई ग्लानि न लाइB*”

यह बात सुब्रत सिंह को लग गई। उन्होंने फौरन अपने बाप से कहा-“हिसाब कीजिए, सूद समेत इसका कितना रुपया निकलता है?”

रामायण सिंह को भी ताव आ गया। उन्होंने मय सूद समेत 1500 रुपये का हिसाब बता दिए। सुब्रत सिंह ने घर के भीतर से उतने रुपये लाकर बाप के आगे फेंक दिया। बेचारे बाप की हालत तो देखने लायक हो गई थी।

भूपेसरा और उसकी मां सुब्रत सिंह को सौ-सौ दुआएं देते हुए अपना कागज लेकर घर को लौट पड़े।

— प्रियंका पाण्डेय

Y Y Y Y Y Y Y Y

प्रेम एक शाश्वत अनुभूति

प्रेम वह अनुभूति है जिसमें साथ होने का निरंतर एहसास होता है ! न उम्र न जाति न ऊंच न नीच... प्रेम हर बन्धनों से परे एक आत्मिक शक्ति है जहाँ सब कुछ हो सकता है। कृष्ण और राधा का प्रेम हर जगह आत्मिक रूप से उपस्थित हैं। आत्मिक प्यार की उंचाई और गहराई अनंत होती है। राधा कृष्ण प्रेम के मूर्त रूप हैं, कृष्ण का रास हर गोपिकाओं के संग था लेकिन राधा के साथ उनका प्यार शाश्वत है। प्रेम के बिना जीवन एक कदम भी आगे नहीं चल सकता। जीवन प्रेम से ही प्रकट हुआ है, प्रेम से ही चलता है और प्रेम में ही विलीन हो जाता है। हरेक इच्छा के पीछे प्रेम है। फिर भी प्रेम के साथ समस्या नाम की पूँछ भी आती है। अगर वस्तुओं से ज्यादा प्रेम हो तो वह लालच बन जाता है। अगर लोगों से ज्यादा प्रेम हो तो वह मोह बन जाता है। अगर स्वयं से बहुत प्यार हो तो उससे अभिमान और अहंकार प्रकट होता है और किसी से बहुत ज्यादा प्रेम हो तो मनुष्य ईर्ष्या का शिकार हो जाता है उसे अपने ही प्रेमी के चाहने वालों से विद्वेष होने लगता है।

कहने वाले तो यहां तक कहते हैं कि चाहे वह ईर्ष्या हो, लालच हो, आसक्ति हो या क्रोध हो, सब में प्रेम शामिल है। इस ब्रह्मांड की सभी समस्याओं का कारण प्रेम ही है। प्रेम के बिना जीवन हो ही नहीं सकता। मकड़ी खुद अपना जाल बुनती है और उसी में फंस जाती है, फिर भी जाल के बगैर मकड़ी का होना नामुमकिन है। मानव जीवन भी ठीक ऐसी ही स्थिति में है। प्रेम के बिना उसका अस्तित्व नहीं हो सकता। प्रेम आजादी और मानव जीवन के स्वच्छंद रहने की मूलभूत प्रकृति को छीन लेता है। प्रेम की वह तलाश जो आजादी न छीने सर्वश्रेष्ठ प्रेम है। वह प्रेम जो सब दोषों के परे देखे और जीवन के निर्मल सार का समर्थन करे, ऐसे प्रेम को भक्ति या दिव्य प्रेम कहते हैं।

ओशो की दृष्टि में प्रेम

प्रेम कृत्य नहीं है; वह कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे तुम कर सको। अगर तुम इसे कर सकते हो तो यह प्रेम नहीं है। प्रेम किया नहीं जाता है, होता है। वह कृत्य नहीं, होने की अवस्था है।

कोई व्यक्ति कोई कार्य चौबीस घंटे नहीं करता रह सकता है। अगर तुम प्रेम 'करते हो' तो उसे तुम चौबीस घंटे नहीं कर सकते। हर काम थका देता है; हर काम से ऊब पैदा होती है। हर कृत्य के बाद विश्राम की जरूरत पैदा होती है। अगर तुम प्रेम भी करते हो तो तुम्हें घृणा में विश्राम करना होगा। क्योंकि विपरीत में ही विश्राम संभव है। इसी वजह से सदा हमारे प्रेम में घृणा मिली होती है। इस क्षण तुम किसी व्यक्ति को प्रेम करते हो और अगले क्षण उसको ही घृणा भी करते हो। एक ही व्यक्ति तुम्हारे प्रेम और घृणा दोनों का पात्र हो जाता है। प्रेमियों का द्वंद्व यही है क्योंकि तुम्हारा प्रेम कृत्य है, इसलिए उसमें इतना दुख और संताप है।

इसमें और बातें भी निहित हैं। प्रेम प्रयत्न भी नहीं है। अगर प्रेम प्रयत्न हो तो तुम थक जाओगे। प्रेम चित्त की एक अवस्था है। और इसे संबंधों की भाषा में भी मत सोचो, इसे चित्त की एक अवस्था की भांति सोचो। अगर तुम प्रेमपूर्ण हो तो वह चित्त की एक अवस्था है। यह चित्त की अवस्था एक व्यक्ति पर भी केंद्रीभूत हो सकती है और यह समस्त पर भी फैल सकती है। जब वह एक व्यक्ति पर केंद्रित होती है तो उसे प्रेम कहते हैं और जब वह अकेंद्रित होकर समस्त पर फैल जाती है तब वह प्रार्थना हो जाती है। तब तुम बस प्रेम में होते हो; किसी के प्रेम में नहीं, सिर्फ प्रेम में।

ऐसा प्रेम कैसे मिले? ऐसे प्रेम को लेकर कौन जिया है? इन सब सवालों के जवाब पाने की खोज ने आध्यात्मिक यात्रा को प्रारम्भ किया है। आध्यात्मिक यात्रा इस दुनिया से परे कोई अलग ही वस्तु प्राप्त करने की कल्पना नहीं है। यद्

जीवन के परम लक्ष्य को पाने की चेष्टा है, जिसे भक्ति या दिव्य प्रेम कहते हैं। प्रेम क्या है- यदि ये बिल्कुल पता ही नहीं है तो दिव्य प्रेम को समझना नामुमकिन है।

प्रेम की कई अभिव्यक्तियां हैं, जैसे अपनों से छोटों के प्रति स्नेह होता है, हमउम्र लोगों से दोस्ती और अपने से बड़ों के प्रति सम्मान और आदर। इसी तरह वस्तुओं, पशुओं, पेड़ों, आहार और संगीत से प्रेम होता है। पसंद, नापसंद भी प्रेम पर आधारित है।

वह आदमी जो सुन नहीं सकता, उसे किसी भी तरह ये समझा नहीं सकते कि ध्वनि क्या है। उसी को समझा सकते हैं जिसे पहले से कुछ मालूम हो। कोई देख नहीं सकता, कोई सुन नहीं सकता, पर प्रेम सब महसूस कर सकते हैं। यहां तक कि पत्थर और पशु भी प्रेम महसूस कर सकते हैं। जैसे बिल्लियां पास आकर म्याऊं बोलते हुए घुरघुराने लगती हैं। कुत्ते भी प्रेम अभिव्यक्त करते हैं। वे आगे पीछे भागते हुए अपनी पूंछ हिला-हिला कर अपना प्यार व्यक्त करते हैं। वे सब जगह कूदते फिरते हैं। वे तुम्हारे चारों ओर भागते हैं। यानी बिना कोई अपवाद के सभी में प्रेम महसूस करने की क्षमता है।

जीवन में प्रेम से बचा नहीं जा सकता है। प्रेम अटल और अमर है। प्रेम हो जाना और प्रेम टूट जाना बहुत आसान है। एक दिन प्यार हो जाता है और दो महीने बाद ऐसा लगता है कि वो प्यार टूट गया है, लेकिन दिव्य प्रेम कभी नहीं बदलता, वह अमर है, उसके साथ कोई शर्त नहीं जुड़ी हुई है। ये उस परम प्रेम के लक्षण हैं, जिसमें अंदर एक गहरी उत्कंठा, एक तीव्र अभीप्सा जन्म लेती है।

मीरा का प्रेम

मीरा अपने बाल्यावस्था में भगवान कृष्ण की मूर्ति से खेलती है। इस दौरान वह यह भी पूछती है कि मां मेरा ब्याह किसके साथ होगा। मां कहती है कि इसी कान्हा से साथ तेरा ब्याह कर दूंगी। फिर मीरा मन ही मन कान्हा को अपना पति मान लेती है। जब वह बड़ी होती है तो उसके माता पिता राजा भोज के साथ उसकी शादी करवा देते हैं। विदाई के समय मीरा अपने गिरधर गोपाल को भी अपने साथ ले जाती है।

जब मीरा ससुराल पहुंचती है तो उसकी सास गौरी पूजन करने के लिए ननद से कहती है। मां के निर्देश पर जब ननद गौरी पूजन के लिए मीरा से कहती है तो कृष्ण के प्रेम में दीवानी मीरा कहती है कि मेरे तो दुनियां में सब कुछ गिरधर गोपाल हैं और दूसरा कोई नहीं। जब ननद यह बात महाराजा से कहती है तो यह सुन महाराजा क्रोधित हो जाते हैं। राजा एवं ननद उसे तरह तरह से परेशान करने की योजना बनाते हैं।

मीरा जैसी भक्ति की ऐसी चरम अवस्था कम ही देखने को मिलती है। इंसान आमतौर पर शरीर, मन और बहुत सारी भावनाओं से बना है। यही वजह है कि ज्यादातर लोग अपने शरीर, मन और भावनाओं को समर्पित किए बिना किसी चीज के प्रति खुद को समर्पित नहीं कर सकते। विवाह का मतलब यही है कि आप एक इंसान के लिए अपनी हर चीज समर्पित कर दें, अपना शरीर, अपना मन और अपनी भावनाएं। समर्पण के लिए प्रेम का होना जरूरी है। प्रेम कभी प्रेमी से कुछ नहीं चाहता वह तो अपना सर्वस्व उसे दे देना चाहता है। मीरा भी कृष्ण से कुछ नहीं चाहती हैं वो तो अपने गिरधर गोपाल के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रति पल तत्पर हैं। ससुराल वाले चाहे जहर दिए या अमृत उसकी उन्हें कोई परवाह नहीं क्योंकि वे तो संपूर्ण रूप से प्रेम में पग चुकी हैं। प्रेम में सराबोर रहने वाली मीरा के लिए इस संसार में कुछ भी प्राप्त करने योग्य नहीं था वे तो केवल अपने प्रेमी कृष्ण के लिए ही जी रही थीं। जीवन यदि प्रेममय हो जाए तो उसे सर्वत्र अपना प्रेमी ही दिखेगा यही तो प्रेम की पराकाष्ठा है।

— इंद्र ज्योति राय

हावड़ा ब्रिज

कोलकाता और हावड़ा को जोड़ने वाला हावड़ा ब्रिज पश्चिम बंगाल में स्थित है। इसका निर्माण 1939 में शुरू हुआ और यह 1943 में जनता के लिए खोला गया था। हावड़ा और कोलकाता को जोड़ने वाला हुगली नदी का यह ब्रिज जब बनकर तैयार हुआ था तो इसका नाम था न्यू हावड़ा ब्रिज था लेकिन 1965 में गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर के नाम पर इसका नाम रवींद्र सेतू कर दिया गया पर प्रचलित नाम फिर भी हावड़ा ब्रिज ही रहा। अनुमान यह है कि इस बड़े पुल के निर्माण की राशि 333 करोड़ रुपए थी। यह दुनिया में ब्रैकट पुलों में से एक है। यह 26,500 टन इस्पात से बनाया गया है। आजकल तो यह प्रतिदिन लाखों वाहनों और पैदल चलने वालों को ढोता है।



हावड़ा ब्रिज बनने के पूर्व हुगली नदी पर तैरता हुआ एक पुल था जो अक्सर नदी में पानी बढ़ जाने पर ऊँचा उठ जाता था और इस पुल पर जाम लग जाता था। 1933 में इसकी जगह बड़ा ब्रिज बनाने का निर्णय

हुआ। 1937 से नया पुल बनना शुरू हुआ। इस ब्रिज को बनाने का काम एक ब्रिटिश कंपनी को सौंपा गया था।

हावड़ा ब्रिज इंजीनियरिंग का चमत्कार है। यह विश्व के व्यस्ततम कैंटीलीवर ब्रिजों में से एक है। कोलकाता और हावड़ा को जोड़ने वाले इस पुल जैसे अनोखे पुल संसार भर में केवल गिने-चुने ही हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कोलकाता और हावड़ा के बीच बहने वाली हुगली नदी पर एक तैरते हुए पुल के निर्माण की परिकल्पना की गई। तैरते हुआ पुल बनाने का कारण यह था कि नदी में रोजाना काफी जहाज आते-जाते थे। खम्भों वाला पुल बनाते तो जहाजों का आना-जाना रुक जाता। अंग्रेज सरकार ने सन् 1871 में हावड़ा ब्रिज एक्ट पास किया, पर योजना बनने में बहुत वक्त लगा। पुल का निर्माण सन् 1937 में ही शुरू हो पाया।

जो कंपनी यह पुल बना रही थी उसे यह निर्देश दिया गया था कि वह भारत में बने स्टील का ही इस्तेमाल करेगी। टिस्क्रॉम नाम से प्रसिद्ध इस स्टील को टाटा स्टील ने तैयार किया। 1528 फुट लंबे और 62 फुट चौड़े इस पुल में लोगों के आने-जाने के लिए 7 फुट चौड़ा फुटपाथ दोनों तरफ छोड़ा गया है। सन् 1943 में इसे आम जनता के उपयोग के लिए खोल दिया गया।

इसपर पूरा खर्च उस वक्त की कीमत पर ढाई करोड़ रुपया आया था। इस पुल से होकर पहली बार एक ट्रामगाड़ी चली थी। आजकल इस पुल का रखरखाव कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट करता है जिसकी जिम्मेवारी है कि वह इसे हर हाल में सभी तरह के परिवहनों के उपयुक्त बना कर रखे।

— रीतेश कुमार

प्रजापति ब्रह्मकुमारी संस्थान को नमन

मेरे पड़ोस में रहने वाली एक विधवा जब भी मेरे घर आती तो मुझे तथा मेरी पत्नी को श्यामनगर स्थित प्रजापति ब्रह्मकुमारी संस्थान में जाने का निवेदन करती। कई बार उनका निःस्वार्थ निवेदन पर मैंने जाने का निश्चय किया और उनके साथ सपत्नी उपस्थित हुआ। आगंतकों को नीचे के एक कमरे में बैठाया गया उस दिन कुल 7 पुरुष और 5 स्त्रियां उपस्थित हुए। सबों का नाम, घर का पता, व्यवसाय तथा मोबाइल नं. एक उपस्थितिनुमा डायरी में मैडम ने लिखा। जब मुझसे नाम पूछा गया तो मैंने सच्चिदानंद कहा। मैडम ने पूछा - और ? मैंने उत्तर दिया- “और क्या मैडम ?” मैं तो सत् चित आनन्द हूँ। मेरा और क्या होगा ? “क्या आप अपने पूर्वजों को भूल गयी हैं ? राम, कृष्ण परशुराम भीष्म आदि”। यह सुनकर मैडम बहुत खुश हुई तथा मेरे नाम की तारीफ करने लगी।

मेरी पत्नी प्रथम दिन ही इतनी प्रभावित हुई कि 7 दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण करने का संकल्प ले ली और पूरा किया भी और अब जब कभी मौका मिलता है उस पड़ोसी विधवा के साथ चली जाती है श्यामनगर। मेरी बड़ी बेटी भी सात दिनों का निःशुल्क प्रशिक्षण पूरा कर ली है, परन्तु वह पूरी तरह से इसमें रम नहीं पायी है, जबकि पत्नी इतनी रम गयी हैं कि प्रतिदिन वहाँ जाना चाहती हैं परन्तु मेरे मालदा में रहने के कारण रोज जाना संभव नहीं होता तथापि रोज सुबह शाम तथा रात में ध्यान नियमित रूप से लगाती है और मांशाहारी भोजन स्वतः बिना किसी बाहरी दवाव के छोड़ दी है।

इसे कहते हैं संगति तथा प्रवचन का प्रभाव। घरों में भी प्रायः टी.वी पर प्रजापति ब्रह्मकुमारी का ही कार्यक्रम सुनती रहती है। मैं भी जब घर पर रहता हूँ तो पत्नी के साथ प्रजापति ब्रह्मकुमारी का कार्यक्रम देखता हूँ। यूँ तो ध्यान मैं बहुत वर्षों से पूजा करने के वक्त तथा सोने के समय करता हूँ। तथापि प्रथम दिन के क्लास से ही मेरा मन इस ओर आकृष्ट हुआ तथा ध्यान लगाने की समय में बढ़ोतरी हुई है। मांस-मछली तथा अंडा तो मैं बचपन से ही नहीं खाता हूँ, इसके चलते मुझे कितनी परेशानियां होती हैं, तथापि मैं अपना नियम सिद्धांत से अबतक समझौता नहीं किया। मैं विगत 33 वर्षों से बंगाल में नौकरी कर रहा हूँ आजतक किसी बंगाली परिवार के यहां भोजन नहीं किया, नहीं किसी भोज भात में उपस्थित हुआ हूँ। जब कभी कार्यालय में किसी कर्मचारी के यहां से सम्मिलित रूप में निमंत्रण मिलता है तो मैं सबसे पहले चंदा देता हूँ ताकि मेरे सहकर्मी यह न कहने पायें कि पैसा देने के डर से नहीं जायेंगे कह रहा है। अधिकांश मांसाहारी व्यक्ति, शाकाहारी किसे कहते हैं भी नहीं समझते।

एक बार रेल के किसी कार्यक्रम में मैं अपने एक सहकर्मी के साथ उपस्थित हुआ तथा समाप्ति पर सबको एक एक पैकेट दिया। मैंने भी पैकेट ले लिया और जब खोला तो पैकेट में एक केला, एक मिठाई, एक नमकीन तथा एक अंडा देखा। अंडा देखते ही मुझे सांप सूँघ गया सो मैं अपना पैकेट अपने सहकर्मी को देना चाहा, वह मेरे बारे में जानते थे उन्होंने पैकेट से अंडा निकाल लिया और कहा -“अब तो खाओ, अंडा मैंने ले लिया”। मैंने कहा “मैं अब इस पैकेट के किसी भी चीज को नहीं खाऊँगा”। वे महाशय तर्क वितर्क कर मुझे निरुत्तर करने पर तूल गये, सो असहाय होकर मैंने क्रोधवश कहा- “मान लीजिए अगर यह पैकेट आपके हाथ से मानव या पशु के मल पर गिर जाए तो क्या आप इसे खायेंगे?” उन्होंने कहा- “नहीं”। तो मैंने कहा मांस, मछली, अंडा को मैं उसी प्रकार घृणा का समान मानता हूँ, कृपया इसे आप खा जाइये, अन्यथा मैं किसी अन्य सहकर्मी को दे दूँगा। बस ! करुणामयी ईश्वर से यही प्रार्थना है कि जीते जी इसे खाने की नौबत न आए क्योंकि आजकल के डॉक्टर बाबू इसको विटामिन का भंडार मानते हैं और हमेशा रोगी के इस टॉनिक को खाने की बेवजह सलाह देते रहते हैं। मैंने जब से होश संभाला है तब से इस टॉनिक का उपयोग नहीं किया है।

जब भी मेरी पत्नी प्रजापति ब्रह्मकुमारी जाती है तो मैडम मेरे बारे में अवश्य पूछती हैं तथा क्लास कर लेने की आग्रह करती है। मैं भी करने के लिए तत्पर हूँ, परन्तु फिलहाल मालदा में रहने पर संभव नहीं हो रहा है। कॉचरापड़ा रेल कारखाने में पदस्थापना हेतु आवेदन पत्र दिया हूँ, यहां आते ही तन मन से इस संस्थान में जुट जाऊंगा। एक दिन मैं पत्नी के साथ टीवी पर प्रजापति ब्रह्मकुमारी का समाधान कार्यक्रम देख रहा था। इसमें श्री रुपेश केवर्ट ने कुछ प्रश्नों के उत्तर जानने तथा दर्शकों की शंका समाधान करने के उद्देश्य से श्री बी.के.सूर्या से पूछा “क्या 84 लाख योनियों में मानव को भटकना पड़ता है तब जाके मानव योनि में जन्म होता है?” इसपर कथावाचक श्री बी.के.सूर्या - सीनियर राजयोग टीचर महाराज ने जो इसकी व्याख्या की इसे सुनकर मुझे बड़ी हैरानी परेशानी हुई। इसीलिए मैं यह सब लिखने को मजबूर हुआ तथा इसे श्यामनगर स्थित प्रजापति ब्रह्मकुमारी के माध्यम से उन महाशय तक अपनी आवाज पहुँचाने का प्रयास करूंगा ताकि समाज दिग्भ्रमित न हो तथा इस प्रकार के बिना सिर पैर की बात न की जाए का भी अनुरोध करूंगा।

मैं इस संस्था के प्रति समर्पित हूँ तथापि गलत बात का मैं विरोध भी करूंगा क्योंकि मैं किसी की बातों एवं सलाहों को आँख मूंद कर नहीं मानता अपने तर्क बुद्धि से उसपर विचार करने के पश्चात ही उसे अपनाता हूँ।

उन महाशय का कहना था कि “मानव का जन्म हमेशा मानव में ही होता है, पशु पक्षी या अन्य योनि में नहीं”। इस उत्तर से मुझे गहरी ठेस पहुँची है। यदि उसे सत्य मान लिया जाय तो वेद पुराण आदि ग्रंथों में दिये गये प्रसंग गलत हो जायेंगे। धर्म के प्रति लोगों की आस्था न रहने से समाज का ताना-बाना छिन्न भिन्न हो जायेगा, समाजिक ढाँचा चरमरा जायेगा, लोग और अधिक कुकर्म, बलात्कारी तथा नास्तिक हो जायेंगे। इसीलिए धर्मों में ऐसी कथा कहानी कही गई है कि लोग पाप करने से डरें। उन्हें जन्म मरण का भय बना रहे और कोई भी गलत कार्य करने में डरें परन्तु श्री सूर्या साहब की बात से लोगों का भय दूर हो जायेगा, चाहे चोरी करें, बलात्कार करें या किसी की हत्या करें और जितनी मर्जी कुकर्म से डरने की कोई बात नहीं क्योंकि मैं अगले जन्म में भी मानव ही बनूँगा।

करनी का फल अवश्य मिलता है, इसे स्पष्ट करने के लिए धार्मिक पुस्तकों चित्रों में मानवों को मृत्यु उपरांत किसी को गर्म तेल की कड़ाही में डुबोया जा रहा है, किसी को सांप डंस रहे हैं, किसी को अन्य जीव जन्तु चबा रहे हैं, सत्य कर्म करने वाले को ही गाय की पूँछ नसीब होती है और वे वैतरनी पार हो जाते हैं। ऐसा दिखाने का अर्थ है लोगों को गलत कार्य करने से होने वाला दुष्परिणाम क्या होता है दर्शाना है। और भी दर्जनों धर्म आधारित कहानियाँ, लेख कविताएँ धर्म को और मजबूती प्रदान करने हेतु लिख चुका हूँ जिसका यहाँ उल्लेख करना संभव नहीं तथापि एक मात्र छोटी कविता तथा एक छोटी कहानी रखना चाहता हूँ ताकि मेरी बात स्पष्ट हो सके।

कसाई के पुत्र ने जब
बकरे की टाँगों को कसकर पकड़ा,
कसाई ने बकरे को काटने को छूरा निकाला
बकरे ने करुणामयी भगवान से पूछा-
‘हे प्रभो ! यह क्या हो रहा है ?
इन्होंने मुझे पुत्र जैसा पाला-पोसा
नहलाया हरी-हरी घास खिलाया
साथ में सुलाया सहलाया
आज काटने पर क्यों उद्धत हैं ?
अंतर्धामी भगवान ने कहा-
‘बेटा ! इसमें मेरा कोई दोष नहीं,

पिछले जन्म में तुम कसाई थे;
मालिक तुम्हारा बकरा था।
तुमने भी उसको काटा है, माँस खाया है
उस समय उसने भी यही प्रश्न पूछा था,
घबराओ मत, फिर तुम अगले जन्म में
कसाई बनोगे और मालिक तेरा बकरा,
यही सदियों तक चलता रहेगा।
लाखों करोड़ों में विरले ही
जीवन चक्र को तोड़ पाता है,
और जीवन मृत्यु से बच जाता है।’

— सच्चिदानन्द जिज्ञासु

विश्व हिंदी दिवस

1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में यह संकल्प पारित हुआ कि प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाए। हिंदी दिवस जिस तरह सुपरिचित है वह स्थिति विश्व हिंदी दिवस की नहीं है। हमारे भारत देश में अभी तक हिंदी राजभाषा के रूप में सरकारी कार्यालयों तक पैठी ही नहीं, उच्च शिक्षा के पाठ्य सामग्रियों में तथा कक्षाओं के विभिन्न सत्र में जगह ही नहीं पायी है और चल पड़ी हिंदी विश्व भ्रमण पर। भाषाएं लहरों की तरह अपनी



मंजिलें तय करती रहती हैं अथक, अनवरत और असीमित। यदि भारतीय विश्व में अपनी उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं तब उनकी भाषा को विश्व में दर्ज करने को कब तक टाला जा सकता है। हिंदी की भी यही स्थिति है। कहीं बोलचाल के रूप में, कहीं गीत-संगीत में ढली हुई, कहीं तीज-त्यौहार में उमंगमयी तो कहीं भक्ति-दर्शन आदि अनेक रूपों में हिंदी विश्व में पाई जा रही है।

हिंदी के इस विस्तार के बारे में कितने भारतीय परिचित हैं यह कहना कठिन है किंतु यह कहा जा सकता है कि हिंदी के विस्तार के बारे में अनभिज्ञता बनी हुई है जो हिंदी के साथ-साथ राजभाषा के लिए हितकर नहीं कहा जा सकता है। वर्तमान युग में भाषा के वर्चस्वता की प्रतियोगितापूर्ण दौड़ में यदि विश्व हिंदी दिवस का आयोजन न किया जाए तो हम अपनी भाषिक शक्ति का न तो प्रदर्शन कर पाएंगे। इसलिए विश्व हिंदी दिवस का आयोजन केवल एक आवश्यकता ही नहीं है बल्कि समय की मांग है।

समय की मांग के संग चलना सामान्यतया अत्यावश्यक होता है किंतु उस मांग की पूर्ति करना सामान्यतया एक कठिन चुनौती लगती है। चूंकि हिंदी विश्व में फैली हुई है इसलिए विश्व हिंदी दिवस के द्वारा हिंदी को सहज, सरल बनाते रहने के साथ-साथ इसके एकरूपता पर भी ध्यान देना आवश्यक है अन्यथा हिंदी भाषा में भटकाव आ सकता है। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।

भूमंडलीकरण के दौर में केवल कुछ राष्ट्रों तक सिमट कर रहने से व्यापक लाभ नहीं होगा बल्कि इसके लिए अधिकाधिक देशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार होना चाहिए। प्रत्येक उन्नत और उन्नतिशील देश अपनी-अपनी भाषाओं के प्रसार के लिए प्रयत्नशील हैं तो तमाम खूबियोंवाली हिंदी के लिए विश्व में मुनादी से हिंदी को क्यों वंचित रखा जाए। विश्व में हिंदी की लोकप्रियता का जब संदेश देंगे तथा साथ ही यह भी दर्शाएंगे कि हिंदी भारतीयों के दिल की भाषा है। यदि इस प्रकार विश्व में हिंदी का संदेश देने में सफल हो जाते हैं तो हिंदी विश्वभाषा बनने की होड़ में अपनी प्रबल दावेदारी रख सकेगी।

हिंदी दिवस का उद्देश्य भारत में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करना तथा हिंदी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। इसी संकल्पना सहित 14 जनवरी 1975 से विश्व हिंदी सम्मेलन का आरम्भ हुआ जो मॉरिशस, नई दिल्ली, मॉरिशस, त्रिनिडाड व टोबैगो, लंदन, सूरीनाम और न्यूयार्क में आयोजित किए जा चुके हैं। विश्व हिंदी दिवस के प्रचार-प्रसार की पृष्ठभूमि में राजभाषा की भूमंडलीय उड़ान भी संलग्न है। वैसे तो इसका आयोजन किया जा रहा है पर इसमें वो बात नहीं जो यह बता सके कि सचमुच हिन्दी विश्व में बोली जाने वाली ऐसी भाषा है जो अपने भीतर अनंत संभावनाएं सुरक्षित रखी है।

हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली पहली भाषा है पर इसे तीसरे नंबर पर माना जाता है। यह बहुत दुःख की बात है कि अनेक प्रयासों के बावजूद हिंदी को संयुक्त राष्ट्र की भाषाओं में अभी तक स्थान नहीं प्राप्त हुआ है। इसका एक बड़ा कारण यह है कि उन्हें प्रायः गलत नुस्खे सुझाए जाते रहे हैं। अंग्रेजी पढ़ना सीखना ऐसा ही नुस्खा है। इसके जरिए यह



समझाया जा रहा है कि लोगों का विकास अंग्रेजी के बिना नहीं हो पाएगा। दरअसल हमारे समय की एक बड़ी विडंबना यह है कि लोगो की चिंता अपना भविष्य और अपने परिवार के भविष्य को लेकर है। औपनिवेशिक शिक्षा शुरू होने से पूर्व भारत की देशी पाठशालाओं में हिंदी में पढ़ने वाले बच्चों की संख्या काफी अधिक होती थी।

मैकाले की शिक्षा इस भारतीय शिक्षा के विध्वंस पर खड़ी हुई और अंग्रेजी ने गरीब बच्चों के लिए वंचना का एक कुंभीपाक नरक खोल दिया। यदि लार्ड मैकाले और उनकी अंग्रेजी भारत के वंचित वर्गों के प्रति इतनी सहानुभूतिशील भूमिका का निर्वहण करती तो पिछले दो सौ वर्षों में इन वर्गों का जीवन स्तर सुधर जाना चाहिए था।

। इसके मुकाबिल अंग्रेजी आकर खड़ी हो गई और उसने संप्रभु वर्गों के समक्ष आम आदमी को लगभग गूंगा बना दिया।

विश्व के चार बहुचर्चित एवं सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में भारत का नाम और स्थान महत्वपूर्ण होने के बाद भी उसकी सवा अरब जनता की राष्ट्रभाषा हिंदी को नजरंदाज किया जा रहा है जो उचित नहीं है। हिंदी को विश्व भाषा बनाने के लिए सातवें विश्व हिंदी सम्मेलन में दो बातों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। पहला हमारी सरकार संयुक्त राष्ट्रसंघ में इसे मान्यता दिलाए, दूसरे सभी लोग सरकारी और रोजमर्रा के जीवन में हिंदी को अपनाएँ और अपने बच्चों और विदेशियों को हिंदी प्रयोग में प्रोत्साहन दें।

भाषा, व्याकरण, साहित्य, कला, संगीत के साथ-साथ अभिव्यक्ति के सभी माध्यमों में हिंदी ने अपनी उपयोगिता, प्रासंगिकता एवं वर्चस्व कायम किया है। हिंदी की यह स्थिति हिंदी भाषियों और हिंदी समाज की देन है। लेकिन हिंदी समाज का एक तबका हिंदी की दुर्गति के लिए जिम्मेदार है। हिंदी परिवेश के अंग्रेजी दां लोगों ने हिंदी का सबसे अधिक नुकसान किया है। यह धारणा कि अंग्रेजी बोलने वाला ज्यादा ज्ञानी और बुद्धिजीवी है, हिंदी भाषियों में हीन भावना ग्रसित करती है। हिंदी भाषियों को इस हीन भावना के उबरना होगा।

मातृभाषा में ही मौलिक विचार आते हैं। कल्पना के पंख लगते हैं। शिक्षा का माध्यम भी मातृभाषा होनी चाहिए क्योंकि शिक्षा विचार करना सिखाती है और मौलिक विचार उसी भाषा में हो सकता है जिस भाषा में आदमी सांस लेता है, जीता है। जिस भाषा में आदमी जीता नहीं उसमें मौलिक विचार नहीं आ सकते। हिंदी किसी भाषा से कमजोर नहीं और न ही हीन है। जरूरत है आत्मविश्वास की। लोग अपनी भाषा में आत्मविश्वास के साथ अपनी बात जोरदार तरीके से अगर रखें तो सामने वाले की मजबूरी होगी कि वह उसकी बात ध्यान से सुने। इसके लिए हमें मानसिक रूप से तैयार होने की आवश्यकता है। बहुत सारे लोग केवल हिन्दी में ही बातें करते हैं और बहुत जोरदार ढंग से अपने विचार दूसरों के सामने प्रस्तुत करते हैं। हम उनकी तरफ देखकर कुछ तो सीख ही सकते हैं कि हिन्दी अब कमजोर नहीं जिसे अंग्रेजी के बैसाखी की जरूरत है।

— अर्जुन बैठा

जरा हंसिए तो

सरकार ने मिलावट करने वालों के विरुद्ध कड़ी चेतावनी देते हुए घोषणा कर दी थी कि जो भी मिलावट करते हुए पाया जाएगा उसे सख्त सजा दी जाएगी। इसके लिए राज्य के सभी थानों को आदेश दे दिए गए कि इस संबंध में त्वरित कार्यवाही करें। थाना प्रभारी ने अपने सिपाहियों को कड़ी हिदायत देते हुए कहा- “आज शाम तक यदि पांच-छः मिलावटकर्मी नहीं पकड़े गए तो मैं तुम सब को निलंबित करने की सिफारिश भेज दूंगा।”

डरे-सहमे सिपाहियों ने शाम होते-होते कई जोड़े कॉलेज के छात्र-छात्राओं तथा होटल मालिकों को गिरफ्तार कर थाने में ले आए। थाना प्रभारी मुच्छल सिंह बहुत खुश हुए और बोले- “बोलो ये लोग क्या मिला रहे थे।”

सिपाही बोला- “सर ! ये कॉलेज के लड़के-लड़कियां आंखें मिला रहे थे और ये होटल वाले आलू में गोभी और मसाला मिला रहे थे।”



एक देहाती आदमी जो कद-काठी से पहलवान लगता था, रेलवे बुकिंग काउंटर के पास जाकर बोला- “ए रेल बाबू हमें अपनी बहन के यहां जाना है। गाड़ी से जाने वाला टिकट दीजिए।”

कल उसको जानता था इसलिए उसको एक टिकट देते हुए बोला- “सात रुपये दो और प्लेटफॉर्म पर चले जाओ अभी गाड़ी आएगी।”

पहलवान गाड़ी के आने के बाद जैसे ही अपना एक पांव पायदान पर रखा ही था कि उसी वक्त गाड़ी ने सीटी दे दी। पहलवान उतर गया और कल को टिकट लौटाते हुए बोला- “रेल बाबू, जब एक पांव रखते ही आपकी गाड़ी चीखने लगी तो चढ़ जाते तब तो टट्टी-पेशाब करने लगोगी।”



अदालत में एक अनपढ़ लोहार गवाही के लिए खड़ा किया गया। दूसरी तरफ के वकील ने पूछा- “तुम दोनों पक्ष के प्रतिवादी को जानते हो?” लोहार ने पूछा- “ये वादी-प्रतिवादी क्या बला है?” वकील ने चिढ़कर कहा- “बड़े अजीब आदमी हो ! गवाही देने आये हो और वादी

-प्रतिवादी में फर्क नहीं जानते? अच्छा ये आदमी किस जगह खड़े होकर लड़ रहे थे?”

लोहार बोला- “ये दोनों मेरी दुकान में खतौड़ी की रतौड़ी में लड़ रहे थे।”

यह खतौड़ी की रतौड़ी क्या बला है? वकील ने पूछा।

लोहार की अब बारी थी, वह बोला- “अजीब आदमी हो वकील साहब ! अदालत करने चले आये और खतौड़ी की रतौड़ी का मतलब ही नहीं जानते? इसका मतलब तो मेरी बुढ़िया भी जानती है।”



दो मूर्ख व्यक्ति एक दावत से लौट रहे थे। रास्ते में रेल की पटरी मिली। कोई गाड़ी आने वाली थी। इसलिए फाटक बंद था। वे लोग वहीं बैठकर फाटक खुलने का इंतजार करने लगे और थोड़ी देर के बाद वे लोग वहीं सो भी गए। अचानक कुछ देर बाद एक्सप्रेस गाड़ी के इंजन के शोर से उनकी आंखें खुली।

एक आदमी आंख मलता हुआ बोला- “यार, अभी जिस शहर से हमारी गाड़ी गुजरी है, वह कितना जगमगा रहा था।” और तुमने देखा नहीं कि उसके घर में आग लगी हुई थी।” दूसरा बोला।



एक शहर का रहने वाला अपने एक देहाती मित्र को सिनेमा दिखाने ले गया। मित्र ने सिनेमा कभी नहीं देखा था। हॉल में दोनों बैठे थे, उसी समय विमटो वाला आया। शहरी दोस्त ने दो गिलास विमटो की ली और एक गिलास अपने देहाती मित्र को पीने के लिए दिया।

देहाती मित्र ने पूछा- “यह क्या है?” शहरी दोस्त ने कहा- “पहले पीकर तो देखो।” देहाती ने इधर गिलास को मुंह से लगाया ही था कि उसी समय हॉल की बत्ती बुझ गई। शहरी दोस्त ने अपने देहाती मित्र से पूछा- “कहो, कैसा लगा पीने में?”

देहाती मित्र ने चिल्लाकर कहा- “मत पियो, मैं इसके एक ही घूंट में अंधा हो गया हूं और मुझे अब कुछ नहीं दिखाई देता है।”



— सुरेश सिंह

राजमहल पहाड़ियां

राजमहल पहाड़ियाँ झारखण्ड में छोटा नागपुर पठार के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित हैं। ये पहाड़ियाँ बेसाल्ट निर्मित हैं। ऐसा माना जाता है कि इनका निर्माण जुरासिक युग में होने वाले ज्वालामुखी उद्गार के फलस्वरूप हुआ है। ये पहाड़ियाँ मुख्य रूप से लावा से निर्मित हुई हैं। इसमें कहीं-कहीं पर बेसाल्ट चट्टानों के अवशेष भी पाए जाते हैं कहीं कहीं इनमें ब्लास्ट चट्टानों की अधिकता भी है इनके द्वारा काफी ऊँचे ऊँचे भू-भाग का निर्माण होता है। ये पहाड़ियाँ अभेद्य लगती थीं। यह एक ऐसा खतरनाक इलाका था जहाँ बहुत कम यात्री जाने की हिम्मत करते थे। तथापि यह इलाका निर्जन नहीं था पर जो लोग इनके भीतर रहते थे वे बाहरी दुनिया से लगभग कटे हुए ही होते थे।

ये पहाड़ियाँ गंगा नदी के पश्चिम में दो सौ किलोमीटर उत्तर-दक्षिण में लगभग दुमका तक फैली हुई हैं। मध्य काल में राजमहल का नाम 'उगमहल' था। झारखंड का यह प्रसिद्ध शहर राजमहल की पहाड़ियों में स्थित है। राजमहल पहाड़ियाँ लगभग साढ़े पाँच सौ मीटर की ऊँचाई तक उठती हैं।

'सोरिया' पहाड़ी आदिवासी लोगों का राजमहल की पहाड़ियों में निवास है। घाटियों में संथाल जनजाति द्वारा कृषि की जाती है। मध्यकालीन भारत में बंगाल के सूबेदार और मुगल सेनापति मानसिंह ने तेलियागढ़ दर्रे और गंगा नदी पर सामरिक नियंत्रण के लिए इस जगह को अपनी राजधानी के रूप में चुना था।

यहाँ से 1608 में बंगाल की राजधानी ढाका स्थानांतरित हो गई, लेकिन अस्थायी तौर पर काफी दिनों तक राजमहल ने अपनी प्रशासनिक स्थिति को बनाए रखा था। राजमहल में बादशाह अकबर की ऐतिहासिक महत्त्व की अकबरी मस्जिद और बंगाल के नवाब मीर कासिम का महल है।

यदि हम अठारहवीं शताब्दी के परवर्ती दशकों के राजस्व अभिलेखों पर दृष्टिपात करें तो हम जान लेंगे कि इन पहाड़ी लोगों को पहाड़िया क्यों कहा जाता था। वे राजमहल की पहाड़ियों के इर्द-गिर्द रहा करते थे। वे जंगल की उपज से अपनी गुजर-बसर करते थे और झूम खेती किया करते थे।

वे जंगल के छोटे-से हिस्से में झाड़ियों को काटकर और घास-फूस को जलाकर जमीन साफ कर लेते थे और राख की पोटाश से उपजाऊ बनी जमीन पर ये पहाड़िया लोग अपने खाने के लिए तरह-तरह की दालें और ज्वार-बाजरा उगा लेते थे। वे अपने कुदाल से जमीन को थोड़ा खुरच लेते थे कुछ वर्षों तक उस साफ की गई जमीन में खेती करते थे और फिर उसे कुछ वर्षों के लिए परती छोड़ कर नए इलाके में चले जाते थे जिससे कि उस जमीन में खोई हुई उर्वरता फिर से उत्पन्न हो जाए।

राजमहल की पहाड़िया वस्तुतः संथालों का ही निवास माना जाता है पर ये संथाल लोग राजमहल की पहाड़ियों में कैसे पहुँचे? संथाल 1780 के दशक के आस-पास बंगाल में आने लगे थे। जमींदार लोग खेती के लिए नयी भूमि तैयार करने और खेती का विस्तार करने के लिए उन्हें भाड़े पर रखते थे और ब्रिटिश अधिकारियों ने उन्हें जंगलों में बसने का निमंत्रण दिया। जब ब्रिटिश लोग पहाड़ियों को अपने बस में करके स्थायी कृषि के लिए एक स्थान पर बसाने में असफल रहे तो उनका ध्यान संथालों की ओर गया। पहाड़िया लोग जंगल काटने के लिए हल को हाथ लगाने को तैयार नहीं थे और अब भी उपद्रवी व्यवहार करते थे। जबकि, इसके विपरीत, संथाल आदर्श बाशिंदे प्रतीत हुए, क्योंकि उन्हें जंगलों का सफ़ाया करने में कोई हिचक नहीं थी और वे भूमि को पूरी ताकत लगाकर जोतते थे। इस प्रकार यह माना जाता है कि संथाल ही इन पहाड़ियों में बसने वाले असली वाशिंदे बन गए।

फूल हो तुम

फूल हो तुम किसी भी चमन का तो क्या
सारे कांटे चमन से उठा लाऊंगा
इन फिजाओं से कह दो
यह मेरा बयां कि ना जा इस चमन में
फूल हो तुम

जब मचलती हो तुम कभी
धड़कन ए मेरे दिल की बढ़ जाती है
तुम अगर मेरे दर पर नहीं आओगी
अपने दर को तेरे पास ले जाऊंगा
अपनी बेकल पलकों में चुन-चुन कर
मैं तेरी राहों के कांटे उठा लाऊंगा



जो हवा तेरे रुख से हटाए नकाब
उन हवाओं को बंधक बना लाऊंगा ।
भौंरा जो तेरे लब का रसपान करें
यह मुझे जरा भी गवारा नहीं
चांदनी जो तेरे नाजुक बदन को छुए
चांद से कह दूं आज तू निकलना नहीं

तेरी खामोश लबों की जुस्तजू में
जी करता है चुपचाप सो जाऊं मैं
तू न मिली तो तो क्या
तेरे नाम यह जीवन कर जाऊंगा
फूल हो तुम

—विजय कुमार

किसान

ऊपर रवि किरणों की ताप प्रखर
खुला है बदन नहीं भरा उदर
खेतों के बीच जब जाते हैं
हुई शाम तो थके हुए हुए
लौट को घर फिर आते

सोते हैं खाली खाटों पर
बिस्तर उनका नहीं मखमल
बच्चों की तड़प अनोखी है
ना घर में दूध न रोटी है

देख दशा ऐसी अपनी
मां बच्चों पर भी रोती है
आंसू से गूंथती आटा को
और आकाश को घूरती है



गोदी में नन्हा सा बालक
यूं आंचल में छिप जाता है
देख बाल की क्रीड़ा को
मां मन ही मन मुस्काती है

बच्चों को उठाती गोदी में
उनसे लिपट वो जाती है
मन में आई सारा क्लेश
वह पल भर में भूल जाती है

इसी तरह कटता जीवन
नहीं मिलता कभी आराम
सुबह संग ले बैलों को
जाते खेत की ओर किसान

—विनय कुमार झा

राजभाषा पखवाड़ा-2016 के दौरान आयोजित डीजल शेड जमालपुर एवं साहेबगंज स्टेशन पर आयोजित प्रतियोगिताओं के कुछ दृश्य



**मालदा मंडल के राजमहल व साहिबगंज रेलवे स्टेशनों के आस पास स्थित महत्वपूर्ण
मनमोहक दर्शनीय स्थलों के कुछ दृष्य**

